भाषाई कौशल/क्षेत्र – श्रवण

कक्षा : सातवीं

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – 'शब्दों की कलियाँ अक्षरों की गलियाँ ' * किसी शब्द में आए विभिन्न वर्णों से नए–नए शब्द सुनना–सुनाना। * किसान कि – किताब, किसी, कितना... सा – साल, सायंकाल, साथ... न – नमक, नर, नदी, नमस्ते... इसी तरह अन्य शब्दों से श्रवण का खेल खिलाएँ।	* चार्ट * शब्दसूची	* खेल में रुचि लेता है। * ध्यानपूर्वक सुनता है। * सुने हुए शब्दों के प्रत्येक वर्ण से नए–नए शब्द बनाकर सुनाता है। * एकाग्रचित्त होकर सुनने की क्षमता विकसित होती है। * विचारशक्ति का विकास होता है। * शब्दभंडार में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	प्रयाण गीत, शौर्य गीत, सुवचन, घोषवाक्य, प्राचीन काव्य सुनना–सुनाना।	* चार्ट * सुवचन पट्टी * घोषवाक्य पट्टी * सी.डी. * डी.वी.डी. * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* प्रयाण गीत, शौर्य गीत, सुवचन, घोषवाक्य, प्राचीन काव्य ध्यानपूर्वक सुनता है। * आकलन करता है। * प्रश्नों के उत्तर अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * साहस, आत्मविश्वास, देशप्रेम आदि भावनाओं का विकास होता है। * प्राचीन काव्य के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। * मूल्यों एवं जीवन कौशलों का विकास होता है। * मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	विभिन्न समसामयिक विषयों पर वर्णन, कथा, समाचार सुनना-सुनाना। (शिक्षाधिकार, मानवाधिकार, महिला जागृति, आरोग्य, सामाजिक समरसता आदि के विशेष संदर्भ में)	* चार्ट * समाचारपत्र * दूरदर्शन * रेडियो * सी.डी. * डी.वी.डी. * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* विभिन्न समसामयिक विषयों पर भाषण, वर्णन, कथा, समाचार ध्यानपूर्वक सुनता है। * आकलन करता है। * पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सुनाता है। * सुने गए वर्णन, कथा, समाचार अन्य विद्यार्थियों को सुनाता है। * समसामयिक विषयों से परिचित होकर अपना ज्ञान अद्यावत रखता है। * आत्मविश्वास जागृत होता है। * समसामयिक विषयों पर चर्चा करता है। * भावनाओं का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
३.	विभिन्न वक्ताओं के भाषण ध्यानपूर्वक सुनना तथा भाषण का सारांश सुनाना। (एकात्मता, सत्यप्रेम परस्परालंबन, राष्ट्रीय अस्मिता, स्वतंत्रता, अंधश्रद्धा निर्मूलन, आत्मनिर्भरता आदि के विशेष संदर्भ में)	* भाषण के चार्ट * सी.डी., * डी.वी.डी. * दूरदर्शन, रेडियो * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* विभिन्न वक्ताओं के भाषण ध्यानपूर्वक सुनता है। * आकलन करता है। * भाषण का सारांश सुनाता है। * विभिन्न वक्ताओं के प्रति आदरभाव उत्पन्न होता है। * भाषण में आए मूल्यों को आत्मसात करता है। * मूल्यों को जीवन में उतारने का प्रयास करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	* प्रदर्शनी, पर्यटन, सैर के अनुभव सुनना सुनाना। * प्रश्नों के उत्तर देना।	* चार्ट * चित्र * संदर्भ साहित्य	* प्रदर्शनी, पर्यटन, सैर के अनुभव ध्यानपूर्वक सुनता है। * अपने अनुभव दूसरों को सुनाता है। * दूसरों के अनुभव की समानता एवं भिन्नता से परिचित होता है। * अनुभव का आकलन करता है। * पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है और विद्यार्थियों को सुनाता है। * पर्यटन के प्रति आकर्षण विकसित होता है। * शब्द संपदा में वृद्धि होती है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति संरक्षण की भावना विकसित होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
५.	गद्य, पद्य, नाट्यांशों के माध्यम से वैशिष्ट्यपूर्ण एवं अनुप्रासीय नई शब्दावली सुनना-सुनाना।	* चार्ट * सी.डी., * डी.वी.डी. * रेडियो * दूरदर्शन * संदर्भ साहित्य	* गद्य, पद्य, नाट्यांशों के माध्यम से वैशिष्टपूर्ण एवं अनुप्रासीय नई शब्दावली ध्यानपूर्वक सुनता है। * आकलन करता है। * पूछे गए प्रश्नों को समझकर उनके उत्तर सुनाता है। * अनुप्रासीय शब्द छटा से परिचित होता है। * दैनिक व्यवहार में प्रयोग करता है। * गद्य, पद्य, नाटक आदि विधाओं सें परिचित होता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल : गलत को हटाओ सही को बिठाओ'** गलत शब्द के स्थान पर सही शब्द रखकर मुहावरे बनाना। कृति – शिक्षक मुहावरे के महत्वपूर्ण शब्द के स्थान पर दूसरा शब्द देकर गलत मुहावरा बोलता है। विद्‌यार्थी को सही शब्द का प्रयोग कर सही मुहावरा बोलने के लिए कहता है। उदा. १) नाक में कम होना/ नाक में थम होना/नाक में गम होना (नाक में दम होना) २) आँख का नारा होना/आँख का प्यारा होना/आँख का मारा होना... (आँख का तारा होना)	* छोटे-छोटे सरल मुहावरों का चार्ट	* आनंदपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * सोच-समझकर उत्साहपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * सही शब्द खोजने के लिए अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करता है। * नए-नए सरल मुहावरों से अवगत होकर व्यवहार में उनका उपयोग करता है। * शब्द संपदा का विकास होता है। * तनाव का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	* प्रयाणगीत, शौर्यगीत, सुवचन घोष वाक्य, प्राचीन काव्य की उचित प्रस्तुति करना।	* प्रयाणगीत * शौर्य/वीर गीत के फोल्डर * सुवचन, घोषवाक्य के चार्ट * प्राचीन काव्य का संदर्भ साहित्य	* उत्साह एवं हाव-भाव के साथ प्रयाण गीत, शौर्य/वीर गीत की प्रस्तुति करता है। * शौर्य भाव जागृत होता है। * सुवचन एवं घोष वाक्य उचित आरोह-अवरोह के साथ बोलता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* सुवचनों एवं घोष वाक्यों में दिए गए संदेशों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * प्राचीन कवियों के दोहे, चौपाई, पदों की सस्वर प्रस्तुति करता है। * प्राचीन काव्य का अर्थ समझते हुए उनमें कही गई नीतिपरक बातों को आत्मसात करने का प्रयास करता है। * भावना एवं तनाव का समायोजन होता है।	* स्वाध्याय * उपक्रम
२.	* विभिन्न समसामयिक एवं नियत विषयों पर भाषण देना। घटनाओं का वर्णन करना। वृत्तांत एवं समाचार की प्रस्तुति करना। (सामाजिक, समानता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, संवैधानिक उत्तरदायित्व के संदर्भ में)	* समसामयिक विषयों की सूची का चार्ट * नियत विषय की पट्टी * संदर्भ साहित्य	* समसामयिक विषयों पर भाषण देता है। * नियत विषय पर भाषण देता है। * देखी हुई घटना का वर्णन करता है। * कार्यक्रम का वृत्तांत एवं समाचार प्रस्तुत करता है। * भाषण शैली, वर्णन शैली एवं समाचार प्रस्तुति की शैली के अंतर को समझता है। * अपने सहपाठियों के साथ समाचारों पर चर्चा करता है। * आत्मविश्वास के साथ भाषण देने की कला का विकास होता है। * निर्भीक प्रस्तुति की क्षमता में वृद्धि होती है। * तनाव का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* कार्यक्रम में सुने हुए वक्ताओं के भाषणों का आकलन सहित सारांश बताना। * मुहावरों, कहावतों से बने वाक्य समझकर दोहराना।	* भाषणों की सी. डी. मुहावरों व कहावतों के वाक्यों के चार्ट * संदर्भ साहित्य	* भाषणों को ध्यानपूर्वक सुनकर आकलन करते हुए उनका सारांश बताता है। * भाषणों के महत्त्वपूर्ण मुद्दों को केंद्र में रखते हुए सारांश बताता है। * मुहावरों और कहावतों से युक्त वाक्यों को समझते हुए दोहराता है। * मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करते हुए अन्य सार्थक वाक्य बोलने का प्रयास करता है। * दैनिक व्यवहार के संवादों में मुहावरों व कहावतों के प्रयोग का प्रयास करता है। * मुहावरोंयुक्त भाषा बोलने से प्रसन्न होता है। * तनावमुक्त होकर वार्तालाप करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
४.	* प्रदर्शनी, मेला, सैर पर गुट चर्चा करना। विविध प्रतियोगिता, शिक्षण मेला, खगोलीय विशेष घटनाएँ, संगणक कक्ष, विज्ञान प्रयोगशाला एवं ग्रंथालय की जानकारी के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना।	* प्रदर्शनी, मेला, सैर के चित्र * शिक्षण मेला की जानकारी का चार्ट, * खगोलीय विशेष घटनाओं की जानकारी का चार्ट * संगणक कक्ष की जानकारी का चार्ट	* प्रदर्शनी, मेला एवं सैर के संबंध में गुट के अंतर्गत चर्चा करता है। * प्रदर्शनी, मेला एवं सैर के आनंददायी क्षणों को दोहराता है। * गुट चर्चा में उत्साह के साथ सहभागी होता है। * विविध प्रतियोगिताओं के संबंध में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक कार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* विज्ञान प्रयोगशाला संबंधी जानकारी का फोल्डर * ग्रंथालय की जानकारी का फोल्डर * सी.डी., डी.वी.डी. संदर्भ साहित्य	* मन के संदेहों के निराकरण हेतु स्वयं संबंधित प्रश्न पूछता है। * शिक्षण मेला से संबंधित प्रश्नों के उत्तर देता है। * विशिष्ट खगोलीय घटनाओं के विषय में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। * संगणक कक्ष, विज्ञान प्रयोगशाला एवं ग्रंथालय के संबंध में प्रश्नों के उत्तर देता है। * प्रश्नोत्तर के माध्यम से आत्मविश्वास बढ़ता है। * संदेहों के निराकरण से ज्ञान में वृद्धि होती है। * गुट चर्चा में निर्भीकता का विकास होता है। * तनाव का समायोजन होता है।	
५.	* गद्य–पद्य, नाट्यांश, संवाद, निबंध आदि के माध्यम से हिंदी के विविध वैशिष्ट्यपूर्ण एवं अनुप्रासीय शब्दों को दोहराना।	* गद्य–पद्य, नाट्यांश संवाद, निबंध के फोल्डर * संदर्भ साहित्य	* गद्य–पद्य, नाट्यांश, संवाद, निबंध के वैशिष्ट्यपूर्ण शब्दों को दोहराता है। * वैशिष्ट्यपूर्ण शब्दों को दोहराते समय यथोचित हाव–भाव आरोह–अवरोह का ध्यान रखता है। * शब्दों को दोहराने की प्रक्रिया में आनंद का अनुभव करता है। * विशेषकर पद्य के शब्दों को दोहराता है। * शब्दों को दोहराते हुए ताल–अनुताल का आनंद उठाता है। * वैशिष्ट्यपूर्ण एवं अनुप्रासीय शब्दों की ओर रुझान बढ़ता है। * भावना एवं तनाव का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'शब्दों के पौधे, वाक्यों की क्यारियाँ। शब्दों को सही क्रम में रखकर वाक्य का वाचन करना। **कृति** : अलग – अलग तीन वाक्यों में आए शब्द एक कागज पर क्रम रहित लिखकर विद्यार्थियों के गुट को दें। शब्दों को सही क्रम में रखकर अर्थपूर्ण वाक्य बनाने के लिए कहें। उदा. अभ्यास से, निरंतर, होती है, बात, दृढ़, करे सो, काल, आज, कर, करे, आज, अब, क्या, कंगन को, हाथ, आरसी। १. निरंतर अभ्यास से बात दृढ़ होती है। २. काल करे सो आज कर, आज करे सो अब ३. हाथ कंगन को आरसी क्या?	* क्रमरहित शब्दों के कार्ड * खाली खानों से युक्त कार्ड बोर्ड	* कागज पर लिखे गए सभी शब्दों को पढ़ता है। * पूर्व ज्ञान के आधार पर शब्दों में परस्पर संबंध जोड़ने का प्रयास करता है। * जोड़े गए शब्दों से अर्थपूर्ण वाक्य सुवचन बनाता है। * अर्थपूर्ण वाक्य का प्रकट वाचन करता है। * खाली खाने में संबंधित वाक्य को स्थान देता है। उसे फिर से पढ़ता है। * तर्क क्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * प्रात्यक्षिक * उपक्रम
१.	गीतों, कविताओं (प्रयाण, शौर्य) का मुखर वाचन करना। सुवचनों का मुखर/मौन वाचन करना। घोष वाक्यों का मुखर एवं मौन वाचन करना।	* गीतों का संकलन * सुवचनों का संग्रह/चार्ट * घोष वाक्यों का संग्रह/ चार्ट * संदर्भ साहित्य	* प्रयाण गीतों तथा शौर्य गीतों का लय, ताल, आरोह–अवरोह, हावभाव के साथ प्रभावी वाचन करता है। * सुवचनों का प्रभावी वाचन करता है। * घोष वाक्यों का परिणामकारक प्रभावी वाचन करता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * प्रात्यक्षिक * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* प्रभावकारी भाषा से परिचित होता है। * वाचन में रुचि विकसित होती है। * प्रभावकारी शब्दों, पदों, वाक्यों, गीत-पंक्तियों को याद करता है। * 'शब्दसंग्रह' बढ़ता है। * सुवचनों/घोष वाक्यों में निहित जीवन मूल्यों को समझता है। उनको जीवन में उतारने का प्रयास करता है।	
२.	* कहानी, निबंधों का मुखर एवं मौनवाचन करना। (मुहावरों - कहावतों से युक्त) * पत्रों का वाचन करना।	* पत्रों का संकलन (नमूने के पत्र) * संदर्भ साहित्य	* मुहावरों - कहावतों से युक्त निबंधों का रुचिपूर्वक वाचन करता है। * मुहावरों - कहावतों का अर्थ समझकर निबंध में उनके प्रयोग की विधि से परिचित होता है। * घरेलू पत्रों, मित्र को लिखे पत्रों का वाचन करता है। परिवार के सदस्यों, मित्रों के साथ आत्मीयता बढ़ती है। * शब्द संग्रह बढ़ता है। मुहावरों - कहावतों का संग्रह बढ़ता है। * भाषा के प्रभाव से परिचित होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
३.	समाचारों का वाचन करना। वृत्तांतों का वाचन करना।	* समाचार पत्र * संदर्भ साहित्य	* समाचार-पत्रों में निकले समाचारों का जिज्ञासा से वाचन करता है। प्रवाह पूर्ण वाचन करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			❊ परिसर, प्रांत की अन्यान्य गतिविधियों से परिचित होता है। जीवनविषयक आकलन क्षमता/जानकारी बढ़ती है। ❊ समाचार की भाषा से परिचित होता है। समाचार की शब्दावली से परिचित होता है। ❊ वृत्तांतों का प्रवाहपूर्ण, रुचि तथा जिज्ञासा से वाचन करता है। ❊ विवरण की प्रणाली से अवगत होता है। ❊ विवरण की भाषा से परिचित होता है।	❊ स्वाध्याय ❊ उपक्रम
४.	खगोलीय घटना का वर्णन पढ़ना। प्रयोग शाला का वर्णन पढ़ना। (मुखर एवं मौन वाचन)	❊ प्रयोग शाला के साधनों का चार्ट ❊ संदर्भ साहित्य	❊ सूर्यग्रहण, चंद्रग्रहण आदि खगोलीय घटनाओं का वर्णन रुचिपूर्वक पढ़ता है। ❊ खगोलीय घटनाओं में निहित कार्य - कारण भाव समझाता है। ❊ वैज्ञानिक दृष्टि पनपती है। ❊ प्रयोगशाला तथा उसमें समाविष्ट साधन - सामग्री का वर्णन रुचिपूवर्क पढ़ता है। ❊ शब्दसंग्रह बढ़ता है। ❊ वाचन के संबंध में आत्मविश्वास बढ़ता है। ❊ तर्कसम्मत एवं वैज्ञानिक ढंग से सोचने की क्षमता विकसित होती है।	❊ निरीक्षण ❊ कक्षाकार्य ❊ सहपाठी मूल्यांकन ❊ स्वाध्याय ❊ उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	प्रादेशिक साहित्यकारों की जानकारी पढ़ना।	* चार्ट * संदर्भ साहित्य	* अपने राज्य/प्रांत के साहित्यकारों की जानकारी रुचिपूर्वक पाढ़ता है। * साहित्यकारों द्‌वारा रचित रचनाओं के नाम जानता है। * सरल साहित्यिक शब्दावली से अवगत होता है। * सामान्य साहित्यिक भाषा से परिचित होता है। शब्दसंग्रह बढ़ता है। * अन्य क्षेत्रों के मान्यवरों की जानकारी पढ़ने की जिज्ञासा पैदा होती है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** ''वर्णानुक्रम'' कृति -दिए गए शब्दों को वर्णमाला के अनुसार शब्दक्रम बनाकर लिखना।	* वर्णमाला का चार्ट * शब्द चार्ट	* दिए गए शब्दों का ध्यानपूर्वक आकलन करता है। * वर्ण एवं मात्रा के अनुसार उनका क्रम लगाता है। * वर्णानुक्रम लगाकर लेखन करता है। * खेल में रुचिपूर्वक सहभागी होता है। * शब्दकोश देखकर शब्दों के अर्थ समझने की ओर उन्मुख होता है। * वर्णमाला एवं वर्णानुक्रम का दृढ़ीकरण होता है। * वर्णानुक्रमानुसार शब्दलेखन में कुशलता प्राप्त करता है। * विश्लेषण एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
१.	* **अनुलेखन/सुलेखन** विरामचिह्न, मानक वर्तनी का ध्यान रखते हुए परिच्छेद का अनुलेखन, सुलेखन करना।	* परिच्छेद चार्ट * विरामचिह्नों का चार्ट * संदर्भ साहित्य	* अनुलेखन, सुलेखन में रुचि लेता है। * सुडौल और सुपाठ्य लेखन की ओर अग्रसर होता है। * अनुलेखन में विरामचिह्नों का विशेष ध्यान रखता है। * मानक वर्तनी के अनुसार सुलेखन करता है। * सुव्यवस्थित लेखन की ओर प्रवृत्त होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * सह पुस्तक कसौटी

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	* **श्रुतलेखन/शुद्धलेखन :** मात्रा, मानकरूप, विरामचिह्नयुक्त परिच्छेद का श्रुतलेखन, शुद्धलेखन करना।	* परिच्छेद चार्ट * मात्रा चिह्नों का चार्ट * विरामचिह्नों का चार्ट * मानक वर्णमाला का चार्ट	* श्रुतलेखन, शुद्धलेखन में रुचि लेता है। * बोले गए शब्द, वाक्य को ध्यानपूर्वक सुनता है। * वर्ण मात्रा, मानक रूप, विरामचिह्नों का ध्यान रखते हुए शुद्धलेखन, श्रुतलेखन करता है। * निर्दोष लेखन की ओर अग्रसर होता है। * विश्लेषण एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है। * शुद्धलेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
३.	* गद्य, पद्य का क्रमिक एवं श्रृंखलाबद्ध प्रश्नोत्तर लेखन करना।	* प्रश्नसंच * संदर्भ साहित्य	* प्रश्नों का आकलन करता है। * दिए गए पद्यांश, गद्यांश का आकलन करता है। * आकलन के आधार पर क्रमिक एवं श्रृंखलाबद्ध प्रश्नों के उत्तर लिखता है। * आकलन क्षमता एवं वाक्य रचना कौशल का विकास होता है। * आकलन करते समय विश्लेषण क्षमता की वृद्धि होती है। * पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से शब्द संपदा में वृद्धि होती है। * क्रमिक एवं श्रृंखलाबद्ध लेखन का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	* **निर्देशित लेखन:** रूपरेखा के आधार पर कार्यालयीन पत्र एवं कहानी लेखन करना।	* रूपरेखा चार्ट * संदर्भ साहित्य	* रूपरेखा के आधार पर कार्यालयीन पत्र एवं कहानी लेखन में रुचि लेता है। * पत्र की रूपरेखा का आकलन करता है। * रूपरेखा के आधार पर विविध संदर्भों में कार्यालयीन पत्र लिखता है। * कहानी की रूपरेखा का आकलन करता है। * लेखन के प्रमुख मुद्दों को क्रमबद्ध करता है। * रूपरेखा के आधार पर कहानी लेखन करता है। * सृजनशीलता एवं रचनात्मक क्षमता का विकास होता है। * तनाव एवं भावनाओं का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
५.	* **स्वयंस्फूर्त लेखन :** * परिसर के स्थल, व्यवसाय, पशु-पक्षी, प्रसंग आदि का लिखित वर्णन करना। * भाव एवं विचार का कल्पना विस्तार करते हुए लेखन करना।	* परिसर के महत्वपूर्ण स्थलों के चित्र, चार्ट * विविध व्यवसाय, पशु-पक्षी प्रसंग के चार्ट * कल्पना विस्तार हेतु वाक्यपट्‌टी	* स्वयंस्फूर्त लेखन में रुचि लेता है। * परिसर के स्थल, व्यवसाय, पशु-पक्षी प्रसंग आदि पर चर्चा करता है। * विचार एवं भावों को क्रमबद्ध करते हुए लिखित रूप में वर्णन करता है। * दिए गए भाव, विचार का आकलन करता है। * भावों और विचारों का कल्पना विस्तार करते हुए लेखन करता है। * कल्पना विस्तार करते हुए मुहावरों, कहावतों का प्रयोग करता है। * वर्णन एवं कल्पना विस्तार के माध्यम से अपने भाव एवं विचारों को लिखित रूप में अभिव्यक्त करने हेतु अग्रसर होता है। * सर्जनशीलता, रचनात्मक क्षमता, निर्णय क्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम * प्रकल्प

विषय : हिंदी (प्रथम भाषा) पाठ्यक्रम

भाषाई कौशल/क्षेत्र : क्रियात्मक व्याकरण **कक्षा – सातवीं**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'पक्ष – विपक्ष' **कृति :** * समानार्थी शब्द बताना। धीरे = आहिस्ता, धीमे जल्दी = तुरंत * विरुद्धार्थी शब्द बताना। धीरे ह्व तेज जल्दी ह्व धीरे यहीं ह्व वहीं ऊपर दिए शब्दों का विविध वाक्यों में प्रयोग कराना। इनके अपरिवर्तनीय रूपों का परिचय कराना।	* क्रियाविशेषण से संबंधित समानार्थी शब्दों के चार्ट * विरुद्धार्थी शब्दों के चार्ट * वाक्य पट्टियाँ * संदर्भ साहित्य	* क्रियाविशेषणों के समानार्थी, विरुद्धार्थी शब्दों से परिचित होता है। * इन शब्दों का विभिन्न वाक्यों में प्रयोग करता है। * अपरिवर्तनीय शब्दों से परिचित होता है। * विकारी और अविकारी शब्दों के अंतर को पहचानता है। * आकलन क्षमता में वृद्धि होती है। * अविकारी शब्दों के प्रयोग अपने वाक्यों में करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	पिछली कक्षा की पुनरावृत्ति कराना– अविकारी (अव्यय) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए परिचय प्राप्त करना। अव्यय के सभी भेदों का (क्रिया–विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक) अलग–अलग वाक्यों के माध्यम से परिचय कराना/करवाना।	* अविकारी शब्दयुक्त वाक्य चार्ट * अव्ययों के प्रकारों/भेदों के अनुसार वाक्य चार्ट	* वाक्य में प्रयुक्त अविकारी शब्दों को पहचानता है। * वाक्य में प्रयुक्त अविकारी शब्द के रूप पर अन्य शब्दों के लिंग, वचन, काल आदि का प्रभाव नहीं पड़ता, यह समझता है। * वाक्य में प्रयुक्त शब्द चुनकर लिखता है। * अव्यय के भेदों से परिचित होते हुए अपने भाषण–संभाषण एवं लेखन में प्रयोग करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* अव्ययों का भेदानुसार वर्गीकरण करता है। * निर्णय क्षमता एवं वर्गीकरण क्षमता का विकास होता है।	* उपक्रम
२.	वाक्य में प्रयोग द्वारा कृदत और तद्धित का परिचय प्राप्त करना	* एक क्रिया शब्द से बने हुए अनेक शब्दरूपों का चार्ट * क्रिया छोड़कर अन्य विकारी शब्दों से बने हुए शब्द चार्ट	* विद्यार्थी कृदंत और तद्धित शब्दों से परिचित होता है एवं उनके अंतर को पहचानता है। * संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया से नए-नए शब्द बनाता है। * कृदंत-तद्धित शब्दों की सूची बनाता है। * कृदंत-तद्धित का सहजता से प्रयोग करता है। * निर्णय क्षमता, वर्गीकरण क्षमता में वृद्धि होती है। * अपने भाषण - संभाषण एवं लेखन में यथास्थान प्रयोग करता है। * रचनात्मकता, नवनिर्मिति से आनंद प्राप्त होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
३.	संधि और उसके उपभेदों का परिचय प्राप्त करना। विद्या + आलय जगत् + ईश निः + शेष गिरीश मतैक्य दुष्कर्म	* शब्द चार्ट * संधि के प्रकारों के चार्ट * संदर्भ साहित्य	* स्वर, व्यंजन, विसर्ग से बने शब्द पहचानता है। * स्वर, व्यंजन, विसर्ग से बने संधि के अंतर को समझता है। * संधि विग्रह करता है। * पृथक्करण क्षमता का विकास होता है। * आत्मशक्ति का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* निर्णय एवं वर्गीकरण क्षमता का विकास होता है। * वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होता है।	* उपक्रम
४.	अर्थ के अनुसार वाक्यों का परिचय प्राप्त करना।	* अर्थ के अनुसार वाक्यों का चार्ट * वाक्य पट्टियाँ * वाक्य परिवर्तन के लिए अलग-अलग प्रकार के वाक्यों का चार्ट * संदर्भ साहित्य	* रचना के अनुसार वाक्यों के प्रकार स्मरण करता है। * अर्थ के अनुसार वाक्यों के प्रकार बताता है। * वाक्य परिवर्तन में रुचि लेता है। * रचना और अर्थ के अनुसार वाक्यों के बीच के अंतर को समझता है। * जीवनमूल्यों का विकास होता है। * स्व की पहचान होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिक कार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
५.	**पुनरावृत्ति :** * पिछली कक्षा में पढ़े विराम चिह्नों की पुनरावृत्ति करना। * विराम चिह्न कोष्ठकों ( ), [ ] का परिचय प्राप्त करना। * मानक वर्तनी का सूक्ष्म परिचय प्राप्त करना।	* विभिन्न कोष्ठक चिह्नों का चार्ट * कोष्ठक का उपयोग दर्शाने वाले संवाद, प्रश्न आदि के चार्ट। * मानक वर्तनी के नियमों का चार्ट * वर्तनी के अनुसार गलत और सही वाक्यों का चार्ट * स्लाइड्स प्रक्षेपक (OHP) * संदर्भ साहित्य	* पिछली कक्षा के विराम चिह्नों का पुनरावर्तन करता है। * वाचन, भाषण-संभाषण में विराम चिह्नों के महत्त्व को समझता है। * कोष्ठक, विराम चिह्न के विभिन्न प्रकारों से परिचित हो जाता है। * कोष्ठक चिह्नों के प्रयोग के स्थानों की जानकारी प्राप्त करता है। * कोष्ठक चिह्नों के सहजता से प्रयोग की ओर अग्रसर होता है। * निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			✻ मानक वर्तनी के अनुसार अक्षर, संयुक्ताक्षर, शब्दलेखन में निपुणता प्राप्त करता है। ✻ संज्ञा, सर्वनाम के साथ प्रत्ययों का सही प्रयोग तथा उसकी द्विरुक्ति से संबंधित बारीकियों से अवगत होता है। ✻ अव्यय शब्दों में प्रत्यय मिलाकर या पृथक लिखने के बारे में प्राप्त संकेतों को आत्मसात करता है। ✻ विश्लेषण क्षमता का विकास होता है। ✻ मानक वर्तनी के अनुसार सहजता से शब्द, वाक्य, परिच्छेद लेखन करता है।	

भाषाई कौशल्य/क्षेत्र : व्यावहारिक सृजन कक्षा : सातवीं

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** ''बूझो तो जानूँ'' १) मैं राज्य का वृक्ष हूँ। २) मैं राज्य का पक्षी हूँ। ३) मैं राज्य का पशु हूँ। ४) मैं राज्य का फूल हूँ। ५) मैं राज्य का खेल हूँ। ६) मैं राष्ट्रीय पक्षी हूँ। ७) मैं राष्ट्रीय फूल हूँ। ८) मैं राष्ट्रीय चिह्न (एंब्लम) हूँ। ९) मैं राष्ट्रध्वज हूँ। १०) मैं राष्ट्रीय पशु हूँ। [जारुळ, आम्र, हरियाल, शेकरू, कबड्डी, मोर, कमल, अशोक स्तंभ, बाघ, तिरंगा] (उत्तरः आम्र, हरियाल, शेकरू, जारुळ, कबड्डी, मोर, कमल, अशोक स्तंभ, तिरंगा, बाघ)	* चित्र चार्ट	* खेल में रुचि लेता है। * महाराष्ट्र राज्य के फूल, वृक्ष, पक्षी, पशु, खेल से परिचित होता है। * राष्ट्रीय पक्षी, फूल, राष्ट्रीय (एंब्लम) चिह्न, पशु, ध्वज से परिचित होता है। * राज्य राष्ट्र के प्रतीकों के प्रति आदरभाव जागृत होता है। * राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत होती है। * पर्यावरण, पशु, पक्षी के संरक्षण की भावना जागृत होती है। * राज्य एवं राष्ट्र के अन्य प्रतीक जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
१.	* **अनुवाद :** मराठी-अंग्रेजी के छोटे-छोटे विज्ञापनों का हिंदी में अनुवाद करना।	* विज्ञापन चार्ट	* अनुवाद में रुचि लेता है। * मौखिक एवं लिखित अनुवाद करता है।	* प्रात्यक्षिक * कृति

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* मौखिक अनुवाद का लेखन करता है। * हिंदी–मराठी भाषा में सहसंबंध स्थापित करता है। * हिंदी एवं मातृभाषा की समानता एवं भिन्नता से परिचित होता है। * मातृभाषा के साथ–साथ हिंदी भाषा के प्रति लगाव बढ़ता है। * दैनिक व्यवहार में हिंदी के मानक रूप का प्रयोग करने की ओर उन्मुख होता है।	* सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय
२.	* **व्यावसायिक लेखन:** * विज्ञापन एवं घोषवाक्य का लेखन करना। (कृषि एवं परिसर के अन्य व्यवसाय संबंधी) * विद्यालय के विशेष समाचार, प्रसंग, कार्यक्रम, खेल के संदर्भ में 'वृत्तांत लेखन' करना। (पत्रकारिता के संदर्भ में)	* विज्ञापन * घोषवाक्य का चार्ट * कृषि एवं परिसर के व्यावसायियों के चित्र एवं चार्ट * विद्यालय के विशेष प्रसंग खेल के छायाचित्र	* कृषि एवं परिसर के अन्य व्यवसाय के बारे में चर्चा करता है। * मौखिक विज्ञापन एवं घोषवाक्य बनाता है। * उनका लेखन करता है। * विद्यालय के विशेष प्रसंग, कार्यक्रम, खेल के बारे में चर्चा करता है। * विशेष प्रसंग, कार्यक्रम खेल का वृत्तांत लेखन करता है। * छायाचित्र एवं समाचार लेखन करके संपादक के पास छापने हेतु भेजता है। * विज्ञापन घोषवाक्य एवं समाचार लेखन की क्षमता का विकास होता है। * सृजन एवं कल्पनाशक्ति की अभिवृद्धि होती है। * विश्लेषण क्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम * प्रकल्प

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* **नाट्यकला** * मंच की जानकारी देना। * महान विभूतियों के बारे में एकपात्रीय प्रस्तुति करना। * दूरभाष एवं भ्रमणध्वनि पर की जानेवाली बातचीत की नाट्य प्रस्तुति।	* चित्र * चार्ट * चित्र चार्ट	* मंच पर लगने वाली साधन सामग्री, सजावट, प्रकाश व्यवस्था ध्वनि व्यवस्था, आदि के बारें में मौखिक चर्चा करता है। * मंचीय जानकारी का क्रमबद्ध लेखन करता है। * महान विभूतियों के कार्य के बारे में चर्चा करता है। * उनके व्यक्तित्व, कृतित्व को आत्मसात करता है। * दूरभाष एवं भ्रमणध्वनि पर बोलने का अभिनय करता है। * एकपात्रीय अभिनय करता है। * आत्मविश्वास जागृत होता है। * नाट्यकला के प्रति रुझान बढ़ता है। * वर्गीकरण, विश्लेषण की क्षमता विकसित होती है। * महान विभूतियों के प्रति आदरभाव पैदा होता है। * महान सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव की भावना विकसित होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
४.	* **लिप्यंतरण** * हिंदी विज्ञापनों का रोमन लिपि (अंग्रेजी) में लिप्यंतरण करना। * अंग्रेजी विज्ञापनों का देवनागरी (हिंदी) लिपि में लिप्यंतरण करना।	* विज्ञापन चार्ट (हिंदी, अंग्रेजी)	* लिप्यंतरण में रुचि लेता है। * विज्ञापनों पर चर्चा करता है। * आकलन करता है। * हिंदी (देवनागरी) के विज्ञापनों का रोमन लिपि (अंग्रेजी) में रूपांतरण करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* अंग्रेजी विज्ञापनों का देवनागरी (हिंदी) लिपि में लिप्यंतरण करता है। * अंग्रेजी (रोमन) लिपि एवं देवनागरी (हिंदी) लिपि की वर्णमाला को अवयवों की समानता एवं भिन्नता से अवगत होता है। * मातृभाषा के अतिरिक्त अन्य भाषाओं से अपनापन महसूस करता है। * दोनों लिपियों में सुडौल, सुपाठ्य लेखन की ओर अग्रसर होता है।	* स्वाध्याय * उपक्रम * प्रकल्प
५.	* **सांकेतिक चिह्न** * पिछली कक्षा के सांकेतिक चिह्नों की पुनरावृत्ति करना। * तीनों सेना के पद और पदकों कें संकेत अर्थ बोध करना। * मुद्रित शोधन करना। जैसे : १) ⌄ = अनुस्वार डालें। २) ⌄ = मात्रा, अनुस्वार डालें। ३) () = कोष्ठक डालें।	* सांकेतिक चिह्नों का चार्ट * पद, पदक के नाम और चिह्न मुद्रित शोधन के चिह्न चार्ट	* पिछली कक्षा के सांकेतिक चिह्नों का पुनरावृत्ति करता है। * तीनों सेना के पद और पदकों के बारे में चर्चा करता है। * उनके संकेतों को समझता है। * सेनाओं के प्रति आत्मीयता एवं सम्मान की भावना जागृत होती है। * देशप्रेम का भाव विकसित होता है। * मुद्रित शोधन के चिह्नों से अवगत होता है। * दूसरे विद्यार्थी द्वारा लिखे परिच्छेद में मुद्रित शोधन चिह्नों के माध्यम से सुधार करता है। * हिंदी के शब्दों के मानक रूपों का लेखन में प्रयोग करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम * प्रकल्प

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – ''मुझे सुधारो और सुनाओ'' ✻ मुहावरे, कहावतें अपूर्ण सुनना। अशुद्ध सुनना, सुनकर सही रूप सुनाना – ✻ ऊँट के मुँह में (जीरा) --- अपना–अपना राग ----- (अपनी–अपनी डफली) ✻ गड़े मुर्दे खड़ा करना) (उखाड़ना) ✻ खाने के भाले पड़ना। (लाले)	✻ चार्ट ✻ मुहावरे, कहावतें वाक्य पट्टी ✻ संदर्भ साहित्य	✻ खेल में रुचि लेता है। ✻ मुहावरों, कहावतों को ध्यानपूर्वक सुनता है। ✻ आकलन करता है। ✻ अपूर्ण एवं अशुद्ध अंश को पहचानता है। ✻ मुहावरों, कहावतों का सही रूप सुनाता है। ✻ निर्णय क्षमता का विकास होता है। ✻ वर्गीकरण करता है। ✻ व्यवहार में प्रयोग करता है। ✻ शब्दसंपत्ति में वृद्धि होती है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्याक्षिक ✻ मौखिककार्य ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ उपक्रम
१.	गौरवगीत, कविता, संत वचन, महान विभूतियों के कथन, उद्धरण सुनना – सुनाना।	✻ चार्ट ✻ चित्र ✻ संत वचन वाक्य पट्टी ✻ सी.डी, डी.वी.डी, दूरदर्शन, रेडियो ✻ ध्वनिफीत ✻ संदर्भ साहित्य	✻ गौरवगीत, कविता, संत वचन, महान विभूतियों के कथन, उद्धरण ध्यानपूर्वक सुनता है। ✻ आकलन करता है। ✻ सुने हुए गीत, कविता, संत वचन, महान विभूतियों के कथन सुनाता है। ✻ संत वचन, विभूतियों के कथन, कविता आदि में आए मूल्यों एवं जीवन कौशलों से परिचित होता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ मौखिक ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* मूल्यों एवं जीवन कौशलों को अपने जीवन मे उतारने का प्रयास करता है। * स्त्री–पुरुष संतों, महान विभूतियों के प्रति आदर भाव उत्पन्न होता है।	
२.	काल्पनिक, भावप्रधान, वैज्ञानिक कथा ध्यानपूर्वक समझते हुए सुनना – सुनाना।	* चार्ट * सीडी * डी.वी.डी. * दूरदर्शन * रेडियो * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* काल्पनिक, भावप्रधान, वैज्ञानिक कथा ध्यानपूर्वक समझते हुए सुनता है। * आकलन करता है। * पूछे गए छोटे–छोटे प्रश्नों के उत्तर कक्षा में सुनाता है। * कल्पनाशक्ति का विकास होता है। * वैज्ञानिक दृष्टिकोण बढ़ता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * श्रवण में एकाग्रता की वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
३.	परिसर, राज्य, राष्ट्र में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों उपक्रमों की जानकारी समझते हुए सुनना–सुनाना। अंतरराष्ट्रीय महत्वपूर्ण प्रसंग सुनना–सुनाना।	* चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी. * दूरदर्शन * रेडियो * मानचित्र * संदर्भ साहित्य	* परिसर, राज्य, राष्ट्र, विश्व में आयोजित विभिन्न कार्यक्रम, उपक्रमों की जानकारी ध्यानपूर्वक समझते हुए सुनता है। * आकलन करता है। * पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सुनाता है। * राज्य, राष्ट्र, विश्व के प्रति प्रेम की भावना विकसित होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* विश्वबंधुत्व की भावना विकसित होती है। * अपना ज्ञान अद्‌ययावत करता है। * परिसर के उपक्रमों में सहभागी होता है। * आत्मविश्वास जागृत होता है।	
४.	शैक्षणिक कार्यक्रमों के विज्ञापन, शासकीय संस्थानों की कार्यप्रणाली (परिवहन, नागरी संरक्षण दल, पुलिस दल, सेनादल, होमगार्ड आदि) की जानकारी सुनना-सुनाना एवं प्रश्नों के उत्तर देना।	* चार्ट * विज्ञापन पट्टी * प्रश्नसंच * वर्णन चार्ट * दूरदर्शन * रेडियो * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* विद्यार्थी शैक्षणिक कार्यक्रमों के विज्ञापन, शासकीय संस्थानों की कार्यप्रणाली से ध्यानपूर्वक सुनता है। * आकलन करता है। * पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कक्षा में सुनाता है। * विज्ञापनों की नकल करता है। * शासकीय संस्थानों की कार्यप्रणाली से अवगत होता है। * शासकीय संस्थानों एवं पुलिस, सेना, होमगार्ड आदि के प्रति आत्मीयता जागृत होती है। * शासकीय संपत्ति के संरक्षण की भावना विकसित होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
५.	बाल एकांकी, वृत्तांत, औपचारिक, अनौपचारिक पत्र सुनना-सुनाना	* चार्ट * सी.डी. * डी.वी.डी. * ध्वनिफीत	* बाल एकांकी, वृत्तांत, औपचारिक, अनौपचारिक पत्र ध्यानपूर्वक सुनता है। * आकलन करता है। * पूछे गए प्रश्नों के उत्तर कक्षा में सुनाता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		* दूरदर्शन * रेडियो * संदर्भ साहित्य	* औपचारिक, अनौपचारिक पात्रों से अवगत होता है। * बाल एकांकी के पात्रों से सहसंबंध स्थापित करता है। * सम अनुभूति होती है। * वृत्तांत के माध्यम से भावनाओं का समायोजन होता है। * औपचारिक और अनौपचारिक शब्दों के रूपों से परिचित होता है। * आवश्यकतानुसार औपचारिक तथा अनौपचारिक भाषा प्रयोग करता है। * निर्णय क्षमता विकसित होती है।	

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण-संभाषण **कक्षा - आठवीं**

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'बिगड़ा क्रम चलता नहीं, सही क्रम भूलता नहीं' क्रम बिगाड़कर दिए गए संत वचन को सही क्रम में बोलना। **कृति** : शिक्षक संत वचन की पद्य पंक्तियों को गलत क्रम देकर विद्यार्थियों से सही क्रम में बोलने के लिए कहते हैं। उदाः १. साबित बचा न कोय २. चलती चाकी देखि के ३. दो पाटन के बीच में ४. दिया कबीरा रोय सही क्रम : चलती चाकी देखि के, दिया कबीरा रोय। दो पाटन के बीच में, साबित बचा न कोय।।	✻ गलत क्रम में लिखी पद्य पंक्तियों की पट्टी ✻ संदर्भ साहित्य	✻ आनंदपूर्वक खेल में सहभागी होता है। ✻ पंक्तियों के सही क्रम के संबंध में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करता है। ✻ आत्मविश्वास के साथ पद्य पंक्तियों का सही क्रम बताता है। ✻ खेल के माध्यम से तनावमुक्त होता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ मौखिककार्य ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन
१.	✻ गौरव गीत, कविता, संत वचन, महान विभूतियों के कथन, उद्धरण आदि को आशय के अनुसार प्रस्तुत करना।	✻ गौरव गीत और कविताओं के फोल्डर, संत वचनों की पट्टियाँ महान विभूतियों के कथन के चार्ट	✻ गौरव गीत और कविताओं का आशय समझते हुए उसके अनुसार उन्हें प्रस्तुत करता है। ✻ संत वचन और महान विभूतियों के कथन, उद्धरण के आशय को समझते हुए उनकी प्रस्तुति करता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ मौखिककार्य ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		✻ संदर्भ साहित्य	✻ गौरव गीत के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरवान्वित होता है। ✻ राष्ट्रीयता की कविताएँ प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रप्रेम की ओर उन्मुख होता है। ✻ संत वचनों एवं महान विभूतियों के कथनों की प्रस्तुति से नैतिकता का विकास होता है। ✻ तनाव का समायोजन होता है।	
२.	✻ ध्यानपूर्वक सुनी हुई काल्पनिक, विश्वबंधुता, भावप्रधान, वैज्ञानिक कथाओं को घटनाक्रम के अनुसार कहना। पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना।	✻ काल्पनिक कथा का फोल्डर, ✻ भावप्रधान कथा का फोल्डर, ✻ वैज्ञानिक कथा का फोल्डर ✻ संदर्भ साहित्य	✻ काल्पनिक, भावप्रधान और वैज्ञानिक कथाओं को घटनाक्रम के अनुसार प्रस्तुत करता है। ✻ कथा प्रस्तुति के समय घटनाओं के उचित क्रम को ध्यान में रखता है। ✻ कथाओं के संदर्भ में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करता है। ✻ कथा प्रस्तुति के संबंध में आत्मविश्वास बढ़ता है। ✻ कथाओं पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। ✻ वैज्ञानिक कथाओं के माध्यम से वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर उन्मुख़ होता है। ✻ भावनाओं एवं तनाव का समायोजन होता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ मौखिककार्य ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन
३.	✻ विभिन्न स्तरों की भाषण प्रतियोगिता की जानकारी देना। भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होना।	✻ भाषण प्रतियोगिता की जानकारी का चार्ट। ✻ मुहावरों, कहावतों का चार्ट	✻ विभिन्न स्तरों की भाषण प्रतियोगिता की जानकारी बताता है। ✻ भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होता है। ✻ प्रतियोगिता के स्तर के अनुसार भाषण देता है।	✻ निरीक्षण ✻ मौखिककार्य ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* भाषण एवं पठन में क्रमशः सुने एवं पढ़े मुहावरों – कहावतों का प्रयोग करना।	* संदर्भ साहित्य	* प्रतियोगिता में सहभागी होने से आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * प्रतियोगिता के भाषणों में सुने हुए तथा अध्ययन में पढ़े हुए मुहावरों–कहावतों का प्रयोग करने का प्रयास करता है। * दैनिक बोलचाल में यथास्थान मुहावरों – कहावतों का प्रयोग करता है। * भाषा प्रयोग के स्तर का विकास होता है।	
४.	* सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विज्ञापन, सरकारी संस्थानों की कार्यप्रणाली की जानकारी बताना। * स्थल, समय, छुट्टी का दिन आदि की जानकारी देना एवं चर्चा करना/कराना। * नीति वाक्य बताना।	* सांस्कृतिक कार्यक्रम की विज्ञापन पट्टियाँ * सरकारी संस्थानों की कार्यप्रणाली के चार्ट * स्थल, समय, छुट्टी के दिन की सूची * नीति वाक्य का चार्ट संदर्भ साहित्य	* सांस्कृतिक कार्यक्रमों के विज्ञापन उचित आरोह–अवरोह के साथ सस्वर बताता है। * सरकारी संस्थानों के स्थल, समय एवं छुट्टी के दिन के संबंध में अपने सहपाठियों के साथ चर्चा करता है। * कार्यप्रणाली पर चर्चा करते हुए नियमों के पालन के संबंध में सचेत होता है। * नैतिकता की ओर उन्मुख होता है। * नीतिपरक वाक्य बताता है। * तनाव का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	* औपचारिक, अनौपचारिक प्रसंग का वृत्तांत कथन। * मंच संचालन करना।	* संदर्भ साहित्य	* औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रसंगों के वृत्तांत का कथन करता है। * औपचारिक एवं अनौपचारिक प्रसंगों के अंतर से अवगत होता है। * वृत्तांत कथन एवं मंच संचालन शैली के संबंध में आत्मविश्वास बढ़ता है। * वृत्तांत कथन कार्य की ओर आकर्षित होता है। * तनाव का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** **जोड़ो और पूरा करो** : पठित/परिचित दोहे की अर्धालियों को जोड़कर दोहा पूर्ण करना। पढ़ना। कृति- अध्यापक परिचित दोहों की अर्धालियों को अलग-अलग पट्टियों पर लिखकर रखें। संगत अर्धालियों को जोड़कर पूरा दोहा बनाने तथा पढ़ने के लिए कहें उदा - आँगन-कुटि छवाय निर्मल करे सुभाय बिन साबुन पानी बिना निंदक नियरे राखिए	* दोहे की अर्धालियाँ लिखी पट्टियाँ	* खेल में रुचि लेता है। * दी गई अर्धालियों का उचित संबंध जोड़ता है। * पूरा दोहा पढ़ता है। * दोहों को याद करने की रुचि बढ़ती है। * संत साहित्य के प्रति रुचि बढ़ती है। * जीवन मूल्यों का महत्व समझता है।	* निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षाकार्य * उपक्रम
१.	* गौरव गीत, कविता पढ़ना। संत वचन, महान विभूतियों के कथन, पद का मुखर एवं मौन वाचन करना।	* संत वचनों के चार्ट। * महान विभूतियों के कथनों के चार्ट। * संदर्भ साहित्य	* राष्ट्र, महान विभूतियों के संबंध में गौरवगीतों को रुचिपूर्वक, हाव-भाव के साथ पढ़ता है। * देश, महान विभूतियों के गुणों, विशेषताओ का आकलन करता है। * देश, विभूतियों के गुणों/आदर्शों पर गौरव अनुभव करता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* संतवचन, महान विभूतियों के कथनों को रुचिपूर्वक पढ़ता है। पूछे गए प्रश्नों का वाचन करता है। * संतवचनों/कथनों में निहित मूल्यों का महत्व समझता है। उनको जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * पदों को रुचिपूर्वक पढ़ता है। शब्दसंग्रह बढ़ता है। * वाचन की गति में वृद्धि होती है। आत्मविश्वास बढ़ता है।	
२.	* एकांकी का मुखर एवं मौन वाचन (मुहावरों-कहावतों सहित) * व्यावसायिक पत्र का वाचन।	* एकांकी संग्रह * व्यावसायिक पत्रों के नमूने * संदर्भ साहित्य	* ऐतिहासिक/सामाजिक/पारिवारिक एकांकी का रुचिपूर्वक मुखर एवं मौन वाचन करता है। * उपरोक्त के आशय/तथ्य आदि से अवगत होता है। * उपरोक्त में आए हुए नए शब्दों/मुहावरों-कहावतों से परिचित होता है। शब्दसंग्रह बढ़ता है। * एकांकी का हावभाव सहित वाचन करता है। अभिनय में रुचि बढ़ती है। * व्यावसायिक पत्रों की लेखन विधि से परिचित होता है। व्यावसायिक पत्र की भाषा/शब्दावली से परिचित होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* कथाओं का मुखर एवं मौनवाचन करना। (काल्पनिक, भावप्रधान, वैज्ञानिक, विश्वबंधुता, श्रमप्रतिष्ठापूर्ण)	* संदर्भ साहित्य	* काल्पनिक, भावप्रधान, वैज्ञानिक कथाओं का रुचिपूर्वक वाचन करता है। उपरोक्त में निहित आशय, भाव से परिचित होता है। * वैज्ञानिक दृष्टि विकसित होती है। * उपरोक्त कथाओं से वाचन की गति बढ़ती है। आत्मविश्वास बढ़ता है। * भावनाओं, तनावों का समायोजन होता है। * उपरोक्त के कारण जीवन यथार्थ, परिसर, वैज्ञानिक तथ्य आदि से संबंधित ज्ञान में वृद्धि होती है। * कहानी की विवरणात्मक, वर्णनात्मक, चरित्र–चित्रण प्रधान भाषा से परिचित होता है। * विश्वबंधुता का विकास होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
४.	* राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय महान विभूतियों के प्रेरक प्रसंगों का मुखर एवं मौन वाचन करना। (युवक दिवस १२ जनवरी, शहीद दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस ८ मार्च के संदर्भ में)	* संदर्भ साहित्य	* महान विभूतियों के प्रेरक प्रसंगों को रुचिपूर्वक पढ़ता है। उपरोक्त प्रसंगों से प्रभावित होता है। * प्रेरक प्रसंगों में निहित मूल्यों, आदर्शों से प्रभावित होता है। मूल्यों–आदर्शों को जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * राष्ट्रीयता, सामाजिकता की चेतना विकसित होती है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* प्रेरक प्रसंगों से युक्त साहित्य की रोचक, विवरणयुक्त प्रभावी भाषा–शैली से परिचित होता है। * उपरोक्त के कारण इतिहास की जानकारी बढ़ती है। * देशप्रेम आदि जीवनमूल्यों के प्रति आकर्षण बढ़ता है।	
५.	* हिंदी के साहित्यकारों की जानकारी	* चार्ट, चित्र * संदर्भ साहित्य	* हिंदी के साहित्यकारों की जानकारी रुचिपूर्वक पढ़ता है। * साहित्यकारों के रचनात्मक कार्य से परिचित होता है। * साहित्यकारों की उपलब्धियों को मोटे तौर पर समझता/जानता है। * रचनात्मक लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। * साहित्यिक भाषा सौंदर्य से परिचित होता है। * साहित्यिक (भाषा/सुंदर भाषा)–लेखन की ओर अग्रसर होता है। * आत्मविश्वास बढ़ता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : ''जिन खोजा तिन पाइयाँ'' **कृति** – छिपे शब्द को पहचानकर लेखन करना। **उदाहरण** – मैं एक बड़ा शहर हूँ। मेरे नाम में चार अक्षर है। पहले और दूसरे वर्ण को लें तो श्रवण इंद्रिय बनता है। तीसरे, चौथे वर्ण से गाँव का समानार्थी बनता है। सही शब्द बनाकर लिखना। **उत्तर** – (कानपुर)	* क्रमिक वाक्य पट्टी	* खेल में रुचि लेता है। * बोले गए वाक्यों का ध्यानपूर्वक आकलन करता है। * वाक्यों में छिपे वर्णों को पहचानता है। * वर्णों के मेल से नए शब्द बनाकर लिखता है। * जिज्ञासा वृत्ति का विकास होता है। * विचार एवं विश्लेषण क्षमता की वृद्धि होती है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है। * शब्दसंपदा का विकास होता है। * खेल के माध्यम से तनाव एवं भावनाओं का समायोजन होता है। * सर्जनशीलता में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्याक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	**अनुलेखन, सुलेखन :** विरामचिह्न एवं मानक वर्तनी का ध्यान रखते हुए परिच्छेद का अनुलेखन, सुलेखन करना।	* परिच्छेद चार्ट * विरामचिह्नों का चार्ट * संदर्भ साहित्य	* अनुलेखन, सुलेखन में रुचि लेता है। * विरामचिह्नों एवं मानक वर्तनी से अवगत होता है। * विरामचिह्न एवं नामक वर्तनी को ध्यान में रखते हुए परिच्छेद का अनुलेखन, सुलेखन करता है। * सुडौल, सुपाठ्य लेखन की वृत्ति बढ़ती है। * सुलेखन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * लेखन में साफ–सुथरापन एवं शुद्धता आती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	**श्रुतलेखन, शुद्‌धलेखन –** विरामचिह्न, मानक वर्तनी का ध्यान रखते हुए परिच्छेद का श्रुतलेखन, शुद्‌धलेखन करना।	* परिच्छेद * चार्ट * विरामचिह्नों का चार्ट * संदर्भ साहित्य	* श्रुतलेखन, शुद्‌धलेखन में रुचि लेता है। * विरामचिह्न मानक वर्तनी से अवगत होता है। * विरामचिह्न एवं मानक वर्तनी को ध्यान में रखते हुए शुद्‌धलेखन करता है। * सुडौल, सुपाठ्य लेखन की वृत्ति बढ़ती है। * निर्दोष शुद्‌धलेखन की ओर अग्रसर होता है। * शुद्‌धलेखन प्रतियोगिता में सहभाग लेता है। * विश्लेषण और निर्णय क्षमता में वृद्‌धि होती है। * लेखन क्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
३.	**आकलन के आधार पर लेखन –** गद्‌य, पद्‌य पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखना।	* प्रश्नसंच * संदर्भ साहित्य	* प्रश्नों के उत्तर लिखने में रुचि लेता है। * प्रश्नों का आकलन करता है। * गद्‌य, पद्‌य का आकलन करता है। * प्रश्नों के उत्तर लिखता है। * लेखन में उचित विरामचिह्नों का प्रयोग करता है। * सुडौल एवं सुपाठ्य लेखन की ओर उन्मुख होता है। * प्रश्नोत्तर के माध्यम से सटीक लेखन की अभिवृत्ति जागृत होती है। * विश्लेषण एवं निर्णय क्षमता का विकास होता है। * आत्मविश्वास में वृद्‌धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	**निर्देशित लेखन –** ✻ रूपरेखा के आधार पर व्यावसायिक पत्र एवं वृत्तांत लेखन करना। ✻ पठित-अपठित गद्य, पद्य पर प्रश्न तैयार करके लिखना।	✻ रूपरेखा – (पत्र, वृत्तांत) ✻ प्रश्नसंच ✻ संदर्भ साहित्य	✻ रूपरेखा का आकलन करता है। ✻ रूपरेखा के आधार पर व्यावसायिक पत्र लेखन करता है। ✻ रूपरेखा का आकलन करते हुए वृत्तांत लेखन करता है। ✻ पठित-अपठित गद्य, पद्य का आकलन करता है। ✻ आकलन के आधार पर विविध प्रकार के प्रश्न बनाकर लिखता है। ✻ निर्दोष एवं शुद्ध लेखन की ओर अग्रसर होता है। ✻ लेखन में मानक वर्तनी एवं विरामचिह्नों का उचित प्रयोग करता है। ✻ सृजनशीलता का विकास होता है। ✻ लेखन के माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल में वृद्धि होती है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ स्वाध्याय ✻ उपक्रम ✻ प्रकल्प –
५.	**आशय, वर्णन, कल्पना विस्तार , रेखाचित्र लेखन** ✻ गद्य, पद्य का आशय लेखन करना। ✻ राज्य, राष्ट्र के विशेष स्थल, प्राणी, घटना आदि का वर्णन करना।	✻ राज्य, राष्ट्र के विशेष स्थलों के चित्र ✻ घटनाओं का चित्र ✻ राज्य, राष्ट्र का मानचित्र ✻ संदर्भ साहित्य	✻ आशय, वर्णन, कल्पना विस्तार, रेखाचित्र लेखन में रुचि लेता है। ✻ गद्य, पद्य का आकलन करता है। ✻ आशय समझता है। ✻ आशय का लेखन करता है। ✻ राज्य, राष्ट्र के विशेष स्थलों, प्राणी, घटना आदि का वाचन, निरीक्षण के माध्यम से आकलन करता है।	✻ निरीक्षण ✻ प्रात्यक्षिक ✻ कृति ✻ कक्षाकार्य ✻ सहपाठी मूल्यांकन ✻ सहपुस्तक कसौटी ✻ स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* रेखाचित्र लिखना * अपने भाव और विचारों को कल्पना विस्तार के माध्यम से लेखन करना।		* लिखित रूप में वर्णन करता है। * विचारों और भावों का आकलन करते हुए कल्पना विस्तार के माध्यम से लेखन करता है। * अनुभूतियों, निरीक्षण के आधार पर प्राणियों के रेखाचित्र का लेखन करता है। * विश्लेषण, निर्णय क्षमता, अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है।	* उपक्रम * प्रकल्प

भाषाई कौशल/क्षेत्र : क्रियात्मक व्याकरण

कक्षा – आठवीं

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल : 'मेरी कुर्सी पर कौन?' राम ने कहा कि राम घर जाकर पुस्तक पढ़ेगा। पुस्तक में आई कहानी राम, राम की बहन को सुनाएगा। उपरोक्त वाक्य में उचित जगह सही सर्वनाम का प्रयोग करके पुनर्लेखन करना/कराना। (राम ने कहा कि वह घर जाकर पुस्तक पढ़ेगा। उसमें आई कहानी वह अपनी बहन को सुनाएगा) इस तरह के अन्य वाक्य देकर सर्वनाम, लिंग, वचन, काल का प्रयोग करना/कराना।	* वाक्य पट्टी * सर्वनाम शब्द के चार्ट * संदर्भ साहित्य	* ध्यानपूर्वक वाक्य का वाचन करता है। * संज्ञाओं के स्थान पर उचित सर्वनाम का प्रयोग करता है। * दोनों वाक्यों की तुलना करता है। * समानता – भिन्नता से परिचित होता है। * परिवर्तन से बने वाक्य के सौंदर्य को समझता है। * आकलन क्षमता में वृद्धि होती है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	पिछली कक्षा में पढ़े विकारी शब्दों की पुनरावृत्ति करना। * अव्यय एवं उनके उपभेद का परिचय प्राप्त करना। * काल के भेद, उपभेद का परिचय प्राप्त करना * समास का प्रयोग के माध्यम से सामान्य परिचय प्राप्त करना।	* वाक्य चार्ट * वाक्य पट्टियाँ * परिच्छेद चार्ट * संदर्भ साहित्य	* विद्‌यार्थी भाषण, संभाषण, लेखन में अव्ययों का प्रयोग करता है। * दैनिक व्यवहारों के वार्तालाप में काल के उपभेदों का उचित प्रयोग करता है। * सहजता से अव्यय एवं काल के उपभेदों का वाक्यों में प्रयोग करता है। * आकलन एवं निर्णय क्षमता में वृद्धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * सहपाठी मूल्यांकन * कृति

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* संदर्भ साहित्य में आए हुए सामासिक शब्दों को पहचानता है। * सामासिक शब्दों में आए दो पदों को अलग करके लिखता है। * वर्गीकरण एवं विश्लेषण क्षमता विकसित होती है। * सामासिक शब्दों का प्रयोग भाषण – संभाषण एवं लेखन में करता है। * रचनात्मकता का विकास होता है।	
२.	काल परिवर्तन : परिचय प्राप्त करना।	* क्रिया के कालों के उपभेदों के अनुसार वाक्य पट्टियाँ तथा फोल्डर	* क्रिया के काल और उनके उपभेदों से अवगत होता है। * काल के अनुसार क्रिया रूपों में आने वाले परिवर्तन को समझता है। * भाषण – संभाषण एवं लेखन में क्रिया के काल के अनुसार क्रिया रूपों का प्रयोग करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * स्वाध्याय
३.	* भाषाई अलंकार का सामान्य परिचय प्राप्त करना। * भेदों का परिचय प्राप्त करना।	* वाक्य पट्टियाँ * अलंकार भेद चार्ट	* वाक्य पट्टियों का वाचन करता है एवं उनपर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। * भाषा सौंदर्य से परिचित होता है। * वर्गीकरण क्षमता विकसित होती है। * आनंद लेते हुए अलंकारों एवं उनके उपभेदों से परिचित होता है। * अलंकारों से युक्त भाषा से परिचित होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	छंद – परिचय प्राप्त करना। * दोहा * चौपाई का परिचय	* दोहों से संबंधित चित्र चार्ट * दोहों, चौपाइयों की पट्टियाँ * फलक	* दोहे, चौपाई की रचना एवं सरल अर्थ से परिचित होता है। * दोहों एवं चौपाइयों के अर्थ को समझते हुए उसे लय ताल के साथ सस्वर पाठ प्रस्तुत करता है। * दोहे चौपाई में आए हुए नैतिक मूल्यों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है। * विश्वबंधुता एवं स्नेहभाव निर्माण होता है। * स्व की पहचान होती है। * निर्णयक्षमता, वर्गीकरण क्षमता में वृद्‌धि होती है।	* निरीक्षण * मौखिककार्य * प्रात्यक्षिक * उपक्रम
५.	* पिछली कक्षा में पढ़े वर्तनी के नियमों की पुनरावृत्ति करना। * वर्णों के मेल, पंचमाक्षर, संयुक्ताक्षर द्‌विरुक्ति, श्रुतिमूलक का परिचय प्राप्त करना।	* शब्द चार्ट * शब्द कार्ड * शब्द तालिका * संदर्भ साहित्य	* वर्णों एवं पंचमाक्षरों के मेल से परिचित होता है। * विद्‌यार्थी 'र' से बने हुए विभिन्न प्रकार के संयुक्ताक्षर रूपों को पहचानता है। * संयुक्ताक्षर लेखन की सूक्ष्मता से परिचित होता है। * ध्वनियों के मेल से बने हुए संयुक्ताक्षर का वर्तनी के अनुसार लेखन करता है। * वर्तनी के अनुसार मानक लेखन की ओर अग्रसर होता है। * द्‌विरुक्ति, श्रुतिमूलक से परिचित होता है। * निर्णय क्षमता, विश्लेषण क्षमता में वृद्‌धि होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	भाषाई खेल – ''मूक अभिनय' (एकल/ सामूहिक) कृति : विद्यार्थियों के गुट बनाना– खेत में बीज बोने से लेकर घर तक अनाज लेकर आने की सभी क्रियाओं का प्रत्येक गुट द्वारा क्रमश: मूक अभिनय करना। (खेत जोतना – बीज बोना – सिंचाई करना – मड़ाई – ओसाई – बोरी में भरना, अनाज घर में लाना।)	* किसान एवं कृषिसंबंधी चित्र चार्ट	* खेल में रुचि लेता है। * संबंधित विषयों पर चर्चा करता है। * सभी क्रियाओं का आकलन करता है। * मूक अभिनय करता है। * किसान एवं कृषि के प्रति आदरभाव, लगाव पैदा होता है। * फसल पैदा करने में लगे हुए श्रम को समझता है। * श्रम प्रतिष्ठा की भावना जागृत होती है। * तनाव एवं भावनाओं का समायोजन होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * उपक्रम
१.	अनुवाद : मराठी – अंग्रेजी के संवादों का हिंदी में अनुवाद करना।	* मराठी संवाद की वाक्य पट्टी * अंग्रेजी संवाद की वाक्य पट्टी * शब्दकोश – (हिंदी–मराठी– अंग्रेजी)	* अनुवाद करने में रुचि लेता है। * मराठी में लिखे संवाद पढ़कर आकलन करता है। * मौखिक अनुवाद करता है। * लिखित अनुवाद करता है। * अंग्रेजी में लिखे संवाद पढ़कर आकलन करता है। * मौखिक अनुवाद करता है। * लिखित अनुवाद करता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम * प्रकल्प

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* मराठी–हिंदी–अंग्रेजी में सहसंबंध स्थापित करता है। समानता–विभिन्नता को समझता है। * मातृभाषा के साथ–साथ अन्य भाषाओं के प्रति आदरभाव, लगाव बढ़ता है। * दैनंदिन व्यवहार में हिंदी के प्रयोग की ओर उन्मुख होता है।	
२.	व्यावसायिक लेखन – * परिसर के विशेष समाचार, प्रसंग घटना का वृत्तांत लेखन करना। * विद्‌यालयीन वृत्तांत लेखन एवं रिपोर्टिंग करना। * समसामयिक विषयों पर हास्यव्यंग्य रेखन एवं लेखन करना।	* घटनाओं, प्रसंगों का छायाचित्र * चार्ट * चित्र * संदर्भ साहित्य	* परिसर के विशेष समाचार, प्रसंग, घटना का आकलन करता है। * वृत्तांत का लेखन करता है। * समाचार पत्र में छापने हेतु संपादक को प्रेषित करता है। * विद्‌यालय के शिक्षक, मुख्याध्यापक का साक्षात्कार लेता है। * साक्षात्कार का वृत्तांत लेखन करता है। * संपादक के पास छापने हेतु भेजता है। * समसामयिक विषयों का आकलन करता है। * उसपर हास्य–व्यंग्य का रेखन एवं लेखन करता है। * व्यावसायिक लेखन की ओर उन्मुख होता है। * सर्जनशीलता एवं कल्पनाशीलता की अभिवृद्‌धि होती है। * विश्लेषण क्षमता का विकास होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* **नाट्यकला :** * कठपुतली का सामान्य परिचय * कठपुतली के माध्यम से पाठ्यक्रम पूरक विषयों को प्रस्तुत करना। * मंच से संबंधित प्रादेशिक कला की हिंदी के माध्यम से प्रस्तुत करना।	* कठपुतली का चित्र * संदर्भ साहित्य, सामग्री	* कठपुतली के खेल में रुचि लेता है। * संरचना एवं प्रयोग के माध्यम से कठपुतली के बारे में जानकारी प्राप्त करता है। * कठपुतली बनाता है। * कठपुतली के माध्यम से पाठयक्रम पूरक विषयों को प्रस्तुत करता है। * प्रादेशिक मंच संबंधित कला को हिंदी के माध्यम से प्रस्तुत करता है। * सांस्कृतिक विरासत एवं परंपरा के प्रति आदरभाव एवं आत्मीयता पैदा होती है। * कला के प्रति रुझान बढ़ता है। * भावना एवं तनाव का समायोजन होता है। * सृजन एवं कल्पनाशीलता का विकास होता है। * अपने जीवन में कठपुतली एवं कला को व्यवसाय के रूप में अपनाने की ओर उन्मुख होता है। * खेल एवं मनोरंजन के माध्यम से पाठ्यवस्तु का दृढ़ीकरण होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	* **लिप्यंतरण :** * गद्य-पद्य पंक्तियों का रोमन (अंग्रेजी) में लेखन करना। * अंग्रेजी पंक्तियों का देवनागरी (हिंदी) में लेखन करना।	* गद्य-पद्य की हिंदी में वाक्यपट्टी, अंग्रेजी पंक्तियों की वाक्यपट्टी। * संदर्भ साहित्य	* लिप्यंतरण में रुचि लेता है। * हिंदी गद्य-पद्य पंक्तियों को रोमन (अंग्रेजी) लिपि में लिप्यंतरण करता है। * अंग्रेजी पंक्तियों का देवनागरी (हिंदी) में लेखन करता है। * देवनागरी (हिंदी) एवं रोमन (अंग्रेजी) लिपि में समन्वय स्थापित करता है। * देवनागरी (हिंदी) एवं रोमन (अंग्रेजी) लिपि की समानता एवं भिन्नता से अवगत होता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * उपक्रम
५.	* **सांकेतिक चिह्न :** * पिछली कक्षा में पढ़े सांकेतिक चिह्नों का पुनरावर्तन करना। * मुद्रित शोधन : जैसे – १) । – खड़ी पाई लगाएँ। २) ? – शंका ३) : > कोलन लगाएँ। ४) ह्न बदलें। * आशुलिपि के प्रारंभिक सांकेतिक चिह्न। उदा. क– ख –२ छ ८ ज।	* सांकेतिक चिह्नों का चार्ट * मुद्रित शोधन के चिह्नों एवं उनके अर्थ का लिखित चार्ट * संदर्भ साहित्य	* पिछली कक्षा में पढ़े हुए सांकेतिक चिह्नों का पुन:अभ्यास करता है। * मुद्रित शोधन के संकेतों एवं उनके अर्थ पर चर्चा करता है। * संकेतों के अर्थ समझता है। * दूसरे विद्‌यार्थी द्‌वारा लिखित सामग्री में मुद्रित शोधन चिह्नों का प्रयोग करते हुए उचित संशोधन करता है। * भावी जीवन में मुद्रित शोधन का व्यावसायिक रूप में अपनाने हेतु रुझान बढ़ता है। * निर्णय क्षमता का विकास होता है। * आशुलिपि की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त करता है एवं आशुलिपि का महत्व समझता है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वयं मूल्यांकन * स्वाध्याय * सहपुस्तक कसौटी * उपक्रम * प्रकल्प

अध्ययन–अध्यापन संबंधी निर्देश

१. प्रस्तुत पाठ्यक्रम में दी गई अध्ययन–अध्यापन सामग्री उदाहरण मात्र है। शिक्षक विषय–वस्तु के अनुसार यथोचित अन्य सामग्री का भी उपयोग कर सकते है।

२. पाठ्यक्रम में प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन के अंतर्गत दिए गए मुद्दे उदाहरण के तौर पर हैं। अपेक्षित वर्तन–परिवर्तन की दृष्टि से अन्य मुद्दों का भी समावेश किया जा सकता है।

३. सतत सर्वंकष मूल्यमापन के अंतर्गत दिए गए साधन–तंत्र महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार हैं। संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'सातत्यपूर्ण सर्वंकष मूल्यमापन भाग १,२,३,' के आधार पर दिए गए आठ साधन तंत्रों में से आशय एवं कौशल के अनुरूप उपयोगी साधन तंत्र इस्तेमाल करने के लिए शिक्षक स्वतंत्र हैं।

४. पाठ्यक्रम में केंद्रीय तत्त्व, जीवनमूल्य, जीवनकौशल, संवैधानिक मूल्य से संबंधित निर्देश उदाहरण मात्र है। अपनी सोच, कल्पकता, सर्जनशीलता के माध्यम से उपयुक्त बातों में से विदयार्थियों के वयोगटानुसार उनके जीवन में उतारने व संस्कार करने का प्रयास करने के लिए शिक्षक पूरी तरह स्वतंत्र है।

५. कक्षा की सभी कृतियों–उपक्रमों में सामान्य, विशेष, असाधारण सभी विद्यार्थियों को यथासंभव सम्मिलित किया जाए।

६. कृतियुक्त, उपक्रमशील शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सुलभक की है। आवश्यकतानुसार वह अध्ययन में सहायक सिद्ध हों।

७. जिस घटक का कक्षा में अध्ययन–अध्यापन करना हो, उसकी सूचना शिक्षक, विद्यार्थियों को एक दिन पूर्व दें ताकि विद्यार्थी तैयारी के साथ कक्षा में आएँ।

८. बालस्नेही, बालकेंद्रित, कृतियुक्त शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत आनंददायी वातावरण में तनावरहित, सहज अध्ययन का अत्याधिक महत्व हैं। अत: 'लर्निंग टू लर्न / ज्ञानरचनावाद' के द्वारां विद्यार्थियों को स्वयं अध्ययन के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराएँ।

९. प्रभावी अध्ययन–अध्यापन के लिए विभिन्न अध्यापन पद्धतियों का इस्तेमाल समय की माँग है। शिक्षक इस दृष्टिसे तत्पर रहें। कथाकथन, प्रश्नोत्तर, नाट्यीकरण, गुटचर्चा, सांघिक अध्यापन, प्रयोग, प्रात्यक्षिक आदि अध्यापन पद्धतियों का उपयोग करें।

१०. शिक्षक पाठ्यक्रम के आधार पर भाषाई उद्देश्यों को साध्य करने की दिशा में स्वयं पाठ्यसामग्री तैयार कर सकते हैं।

११. विद्यार्थियों के स्वयंअध्ययन को विशेष महत्व देकर समय–समय पर आवश्यक वातावरण, सूचनाएँ, निर्देश दिए जाएँ।

१२. व्याकरण का अध्ययन–अध्यापन परिभाषा समझाते हुए नहीं बल्कि प्रयोग द्‌वारा क्रियात्मक पद्‌धति से हो ।

१३. व्यावहारिक भाषा सृजन एक प्रकार से व्यवसायोपयोगी सृजन ही है। अनुवाद, व्यावसायिक लेखन, नाट्‌यकला, लिप्यंतरण, सांकेतिक चिह्नों को स्तरीय पद्‌धति से पाठ्‌यक्रम में विस्तारित किया गया है ताकि विद्‌यार्थी भविष्य में अपने व्यवसाय के बारे में सोचने के लिए प्रेरित हो। इस संदर्भ में शिक्षक सकारात्मक भूमिका लें।

१४. निर्देशित अध्ययन–अध्यापन सामग्री के अतिरिक्त शिक्षक अपने ढंग से अन्य सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

१५. शिक्षक के पास अपना शब्दकोश तथा संदर्भ ग्रंथ होना आवश्यक है। शब्दकोश देखने की आदत विद्‌यार्थियों में डाली जाए।

१६. शिक्षा में होनेवाले नित नवीन परिवर्तन जैसे सतत सर्वंकष मूल्यमापन, पुनर्रचित अभ्यासक्रम आदि की यथासंभव सूचनाएँ पालकों को भी देना अपेक्षित है।

मूल्यांकन संबंधी सामान्य निर्देश

१) आठवीं कक्षा तक सतत सर्वंकष क्रमिक मूल्यमापन का प्रावधान किया गया है। सभी विद्‌यार्थियों की गुणवत्ता को विकसित करने पर ध्यान दिया जाए किंतु किसी भी विद्‌यार्थी को अनुत्तीर्ण नहीं करना है।

२) मूल्यांकन प्रक्रिया में लचीलापन हो। मूल्यांकन की पद्‌धति, प्रक्रिया में विविधता हो। मूल्यांकन कृतिशील, तनावमुक्त, बालस्नेही, विद्‌यार्थी केंद्रित हो।

३) मूल्यांकन के सभी स्तरों/प्रकारों का अभिलेख रखने में भी लचीलापन हो। मूल्यांकन आकारिक एवं संकलित दोनों रूपों में करके अंत में श्रेणी का प्रयोग किया जाए।

४) दैनिक अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में मूल्यांकन को स्थान हो।

५) भाषा विषय के मूल्यांकन में केवल आशय की परीक्षा न लेकर भाषा–कौशलों पर अधिक ध्यान दिया जाए।

६) मूल्यांकन में समन्वित बहुसमावेशित पद्‌धति को अपनाया जाए। उदाहरणार्थ श्रवण, भाषण–संभाषण, वाचन, लेखन, क्रियात्मक व्याकरण, व्यावहारिक सृजन के मूल्यांकन के लिए 'जीवन कौशल' जीवन मूल्य' संबंधी पाठों/पाठ्‌यांशों का अधिक उपयोग किया जाए।

७) मूल्यांकन प्रक्रिया भयमुक्त, रोचक, प्रेरक आत्मविश्वासवर्धक तथा सर्वांगीण विकास की ओर ले जानेवाली हो। मूल्यांकन के समय पर विद्‌यार्थियो को निरुत्साहित करनेवाले अपमान सुचक शब्दों, टिप्पणियों तथा किसी भी प्रकार की सजा अग्राह्य है। अनौपचारिक मूल्यांकन हो। सुधार के लिए अवसर प्रदान किए जाएँ। तुलना करनी ही हो तो संबंधित विद्‌यार्थी की पूर्व स्थिति के साथ की जाए। अगर पहले की अपेक्षा उसकी तैयारी बेहतर है तो उसका खुले आम उल्लेख कर उसे प्रोत्साहन दिया जाए। भाषा कौशलोंसंबंधी मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाए कि विद्‌यार्थी किस परिवेश से आया है। आरंभिक कक्षाओं में बोली की शब्दावली, स्थानीय शब्दरूपों को वर्जित न माना जाए। आत्मीयतापूर्वक मानक शब्दों का परिचय कराया जाए।

८) मूल्यांकन में ज्ञानरचनावाद स्वाध्याय समस्याओं के निराकरण की क्षमता आदि का भी ध्यान रखा जाए। ये क्षमताएँ न केवल भाषा के संबंध में बल्कि जीवन मूल्यों/कौशलों के क्षेत्र में भी विद्‌यार्थियों को सक्षम बनाती है।

९) मूल्यांकन इतना व्यापक एवं प्रोत्साहक हो कि विद्‌यार्थियो को अपने बलस्थानों तथा सृजनशक्ति का परिचय हो जाए।

१०) अध्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया में छात्रों से यथासंभव सहायता लें। सहपाठी मूल्यांकन एवं सहपुस्तक कसौटी को महत्व दिया जाए।

११) ऊपर दिए गए निर्देशों के अतिरिक्त अध्यापक मूल्यांकन की अन्य पद्‌धति, प्रक्रिया तथा साधनों का उचित प्रयोग करें।

टिप्पणी : १) प्रस्तावित पाठ्‌यक्रम में भाषाई खेल, अध्ययन–अनुभव, मूल्यांकन आदि के संबंध में यथास्थान उदाहरण एवं निर्देश दिए गए हैं। दिए गए उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य उदाहरण अन्य भाषाई खेल, अध्ययन अनुभव भी दिए जा सकते हैं।

२) मूल्यमापन के संबंध में विस्तृत निर्देश मूल्यमापन संबंधी मार्गदर्शिका में देखे जा सकते हैं।